पाठ 6. क्यों-क्यों लड़की

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य नई-नई चीज़ों को जानने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना है। इसके अलावा इस पाठ के माध्यम से शिक्षा के महत्त्व पर बल दिया गया है। इसमें आदिवासी बच्चों के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है।

पाठ का सारांश

मोइना नाम की एक आदिवासी लड़की थी। वह बाबू की बकरियाँ चराने का काम करती थी। उसकी माँ खीरी टोकरी बनाने का काम करती थी। मोइना हर समय क्यों? क्यों? करते हुए सवाल पर सवाल पूछती रहती थी। इसलिए गाँव के पोस्टमास्टर ने उसे 'क्यों-क्यों लड़की' नाम दे रखा था। वह अपने आपको दीन-हीन नहीं समझती थी और न ही मालिकों का अहसान मानती थी। मोइना शबर जाति की थी। शबर जाति के लोग लड़कियों से काम नहीं कराते थे। मोइना की माँ एक पैर से लँगड़ाती थी। उसके पिता काम की तलाश में दूर गए हुए थे। इसलिए मोइना काम पर जाती थी और उसका भाई जंगल से जलाऊ लकड़ी लाता था। गाँव में समिति की शिक्षिका मालती बोनाल से मोइना कहती थी क्यों मुझे बाबू की बकरियाँ चरानी पड़ती हैं? वह उनसे सवाल पर सवाल पूछती थी। मोइना दूसरे बच्चों से भी कहती कि वे उससे सवाल पूछें। एक साल बाद शिक्षिका मालती दोबारा उसके गाँव पहुँची तो मोइना ने उनसे सवालों की झड़ी लगा दी। मोइना शिक्षिका मालती से स्कूल का समय बदलने को कहती। वह पढ़ना चाहती थी। मोइना अपने भाई और छोटी बहन को भी बताती थी कि 'एक पेड़ काटो तो दो पेड़ लगाओ। खाने से पहले हाथ धो लो, जानते हो क्यों? पेट दर्द हो जाएगा अगर नहीं धोओगे तो।'

गाँव में प्राइमरी स्कूल खुला तो उसमें दाखिल होने वाली पहली लड़की मोइना थी। अब वह अट्ठारह साल की है और समिति के स्कूल में पढ़ाती है। आज भी उसकी आवाज़ में बेचैनी है। वह बच्चों से कहती है कि पूछो, मुझसे सवाल पूछो।

अध्यापन संकेत

पाठ पठन से पूर्व **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्न पर बच्चों से चर्चा करें। पाठ का सस्वर वाचन करें। बच्चों से भी पाठ का एक-एक अंश पढ़वाएँ। बीच-बीच में बच्चों से पाठ से संबंधित प्रश्न पूछें। उन्हें आदिवासी लोगों की जीवनशैली के बारे में संक्षेप में बताएँ। बच्चों को शिक्षा के महत्त्व के बारे में बताएँ।

बच्चों से पूछें और समझाएँ–

- क्या वे घर के कामों में अपनी माँ की सहायता करते हैं?
- क्या वे अपने माता-पिता या अपने अध्यापक/अध्यापिका से प्रश्न पूछते हैं?
- क्या वे देश-दुनिया के समाचार जानने के लिए अखबार पढ़ते हैं?
- बच्चों को समझाएँ कि उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ घर के कार्यों में भी अपने माता-पिता का हाथ बँटाना चाहिए।
- उन्हें पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।
- उन्हें बताएँ कि हमें आलस नहीं करना चाहिए। यह भी बताएँ कि आलस करने से क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं?
- पाठ के अभ्यास को लिखकर करने के लिए प्रेरित करें।
- भाषा की शुद्ध वर्तनी पर बल देने के लिए प्रेरित करें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।